भगत रविदास – सबद १८
जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥
रागु सोरठि, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ६५८

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥
जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥१॥
माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥
तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥१॥ रहाउ ॥
जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥
जउ तुम तीर्थ तउ हम जाती ॥२॥
साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥३॥
जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥
तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥४॥
तुमरे भजन कटहि जम फांसा ॥
भगति हेत गावै रविदासा ॥५॥५॥

सार: अंदरूनी जागरूकता से जुड़ाव एक शांत भाषा खोलती है जिसे बोला नहीं जाता बल्कि महसूस किया जाता है। इस रोशनी में, प्रकृति अलग-अलग चीज़ों का समूह नहीं लगती बल्कि एक जुड़ा हुआ, परस्पर गुंथा हुआ हिस्सा लगने लगती है जहाँ हर रूप एक अनदेखे बंधन से जुड़ा होता है। इसी तरह, स्वयं का अहं अपनी कठोर सीमाओं को खोने लगता है और दूर के अनुभव भी अर्थपूर्ण संबंधों में बदल जाते हैं। जब हम अपने अनुभवों से मिली अंतर्दृष्टि को साँझा करते हैं तब हम सिर्फ़ जानकारी नहीं बल्कि स्पष्टता को साँझा करते हैं। हर ईमानदार सांझेदारी हमारी सामूहिक समझ को मज़बूत करती है जिससे हम एक-दूसरे में स्वयं को पहचान पाते हैं और 'अपनेपन' को सिर्फ़ एक अमूर्त विचार नहीं बल्कि एक जीवित अनुभव के रूप में पुनः खोजते हैं।

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥

तुम बारिश का बादल और मैं मोर हूँ। यह प्रकृति के सामंजस्य का सुंदर उदाहरण है और दिखाता है कि कैसे अलग-अलग तत्व एक-दूसरे को प्रभावित कर समृद्ध करते हैं।

जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥१॥

अगर तुम चाँद हो तो मैं वह चकोर पक्षी हूँ जो एकटक उसकी ओर निहारता है। यह जागरूकता के प्रति आकर्षण को दर्शाता है जो हमें अंधकार में भी प्रकाश की खोज करने के लिए प्रेरित करता है। (१)

माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥

हे प्यारी जागरूकता, अगर तुम यह बंधन नहीं तोड़ते तो मैं भी इसे नहीं तोड़ूंगा। यह परस्पर प्रतिबद्धता को दर्शाता है जिसमें साधक की स्थिरता ज्ञान की निरंतरता में निहित है।

तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥१॥ रहाउ ॥

अगर मैं तुमसे यह संबंध तोड़ दूँ तब फिर किससे जोड़ूंगा? यह दर्शाता है कि जब उद्देश्य सत्य में निहित होता है तब कुछ और जुड़ने के लिए सार्थक नहीं लगता। (१)(विराम)

जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥

अगर तुम दीपक हो तब मैं उसमें जलने वाली बाती हूँ। यह सांझेदारी जागरूकता को प्रकाशित करने के संकल्प का प्रतीक है।

जउ तुम तीर्थ तउ हम जाती ॥२॥

अगर तुम तीर्थ का स्थल हो तो मैं तीर्थ-यात्री हूँ। यह मन की उस यात्रा की ओर संकेत करता है जो अपनी पवित्र मंज़िल को भूगोल में नहीं बल्कि अपने भीतर सर्वव्यापी स्रोत में खोजता है। (२)

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥

मैंने तुम्हारे साथ सच्चा, विशुद्ध प्यार जोड़ा है। यह संबंध को किसी अनुबंध के दायित्व के रूप में नहीं बल्कि अस्तित्व के साथ एक आध्यात्मिक जुड़ाव के रूप में परिभाषित करता है।

तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥३॥

तुमसे जुड़कर, मैंने दूसरों से सभी लगाव तोड़ दिए हैं। यह मायावी इच्छाओं से वैराग्य का प्रतीक है। (३)

जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥

मैं जहाँ भी जाता हूँ, तुम्हारी सेवा में समर्पित रहता हूँ। यह बताता है कि हर काम विविधता में एकता की एक सामंजस्यपूर्ण अभिव्यक्ति के रूप में परिभाषित होता है।

तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥४॥

तुम ही सर्वोपरि स्रोत, सर्वोच्च स्वामी हो और तुम्हारे जैसा शक्तिशाली कोई और नहीं है। यह अद्वैतवाद को स्थापित करता है, मध्यस्थता की संस्थाओं को खारिज करता है क्योंकि हम सभी उस परम शक्ति के ही रूप हैं। (४)

तुमरे भजन कटहि जम फांसा ॥

तुम्हारे चिंतन से नकारात्मकता के बंधन की पकड़ कम हो जाती है। यह उन गुणों को पाने का प्रतीक है जो आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देते हैं।

भगति हेत गावै रविदासा ॥५॥५॥

भक्ति प्रेम में रमे, रविदास कहते हैं कि वह स्वयं के भाव को व्यक्त करते हैं। यह बताता है कि जब सार्वभौमिकता के लिए प्रेम उत्पन्न होता है तब यह अनुभवात्मक अंतर्दृष्टि साँझा करने के लिए प्रोत्साहित करता है। (५)(५)

तत्त्व: भक्त रविदास सर्वव्यापी चेतना के प्रति पूर्ण भक्ति की अवस्था का वर्णन करने के लिए रूपकों का इस्तेमाल करते हैं जिसमें किसी विकल्प या भटकाव के लिए कोई जगह नहीं बचती। भक्ति की इस स्थिति में, भय समाप्त हो जाता है, भ्रम दूर हो जाते हैं और हर काम सार्वभौमिकता के प्रति अटल प्रेम की सीधी अभिव्यक्ति बन जाता है। वह हमें याद दिलाते हैं कि जब हमारा जीवन सत्य में जड़ित होता है तब हमारे अस्तित्व का हर पहलू अनंत सर्वव्यापी स्रोत के साथ सामंजस्य में आ जाता है और जीवन गहन तथा अर्थपूर्ण बन जाता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com